

गङ्गा: 7224. VARĀH. BRH. S. 4, 4. 11, 6. 45, 16. 48, 77. 51, 1. 2. 53, 109. 55, 12. 86, 62. स्थानं राजगृहं नाम KATHĀS. 3, 7. 18, 130. स्थानाद्यपौ गृहम् 40, 31. RĪĀ-TAR. 1, 116 (स्थानम् zu lesen). 2, 57. 5, 90. 297. 6, 182. BHĀG. P. 1, 4, 3. 17, 37. 40. 3, 12, 11. 13, 14. 22, 31. 5, 13, 12. DUDHĀS. 76, 4. 89, 4. SARVADARĢANAS. 13, 9. 12. fg. PAÑĀT. 37, 8. 47, 18. 64, 8. 85, 23. HIT. 25, 19. VET. in LA. (III) 2, 2. Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 6, 512, 1 v. u. स्थाने स्थाने an verschiedenen Orten, hier und da Spr. (II) 4368. RĪĀ-TAR. 2, 131. 4, 48. 306. स्थाने स्थानेषु (vgl. स्थानस्थानेषु KATHĀS. 26, 174) dass. VARĀH. BRH. S. 27, 5. ब्रह्मणः MBH. 1, 2297. 5, 7353. कुबेरस्य AK. 1, 1, 4, 66. मुनीनाम् HALĪ. 2, 143. हिमवतः Spr. (II) 2053. 7047. नावस्य H. 282. वधस्य 930. स्थानत्रयं यतीनाम् (Pansu) PAÑĀT. V. 44. श्राम्योपलब्धये AK. 3, 4, 33, 212. am Ende eines comp.; Accent P. 6, 2, 151. गोस्थानं Schol. श्रम्यं, गजं JĪĀN. 1, 278. श्रविवेकिजनं Spr. (II) 7492. सैन्यं MBH. 7, 464. श्राम्यम् R. 2, 54, 25. 3, 76, 23. मायापुरी KATHĀS. 124, 153. ध्वजं MBH. 5, 3686. द्वारं 7, 1495. वृत्तिकं R. 2, 45, 31. कूर्चं KĪTJ. ÇA. 4, 14, 28. इयम् 5, 6, 6. सितां VARĀH. BRH. S. 34, 124. चित्रकं HARIV. 7074. मुद्रां ÇĀK. 67, 19. शिरःस्थाने पदि कृते R. 1, 46, 17 (47, 15 GORR.). दग्धास्थिं 2, 77, 8. दोहं KĪTJ. ÇA. 25, 6, 3. श्रायातं VARĀH. BRH. S. 48, 81. विनेदं ÇĀK. 80, 22. 81, 22. 86, 17. चरणं KATHĀS. 26, 29. प्रसवः PAÑĀT. 75, 25. Stelle am Körper: मूर्ध्नि स्थाने MAITRĀJUP. 6, 23. दश स्थानानि दण्डस्य M. 8, 124. Suçr. 1, 82, 3. 125, 8. 2, 189, 9. MĀRK. P. 18, 47. fg. BHĀG. P. 2, 2, 13. — n) Statt, Stelle; loc. anstatt AIR. BR. 7, 4. अनुष्ठानम् ÇĀNDĪLA. ÇA. 10, 12, 8. पर्वणाम् ĀÇV. ÇA. 9, 2, 2. 3, 13, 14. KĪTJ. ÇA. 10, 7, 8. 14, 5, 25. सायंदोहस्थाने पुरोडाशः 25, 5, 7. LĪTJ. 1, 4, 8. 5, 4, 6. ĀÇV. GRHJ. 3, 6, 1. Nir. 12, 7. RV. PRĪT. 14, 15. 17. P. 1, 1, 50. 7, 3, 46. RAGH. 12, 58. Schol. zu P. 1, 1, 45. VOP. 4, 8. मामात्मस्थाने बद्धा PAÑĀT. 37, 21. तस्मादस्य कुलीरकं व्यञ्जनस्थाने कोरामि 52, 1. विश्वासस्थाने चतुरः शशकानत्र धृत्वा 55, 22. 83, 19. त्वं भक्तस्थाने स्थितम् 131, 3. विलोचनस्थानगतं die Stelle der Augen vertretend ÇĀK. 4, 4. am Ende eines adj. comp. P. 5, 4, 10. पितृं die Stelle des Vaters vertretend, = पितृतुल्य Schol. धाता धातृस्थानो वा ĀÇV. GRHJ. 1, 7, 8. इयङ्कुवङ्स्थानो य 4 und u, an deren Stelle ij und u treten, P. 1, 4, 4. VOP. 3, 20. स्थाने = साम्ये, सादृश्ये und = कारणे (कारणे MED.) H. an. 7, 32. MED. avj. 46. — o) Stelle für so v. a. Behälter: श्राम्यम् M. 1, 13. जलं MBH. 1, 5888. पाणिपादशलाकाश्च तासां स्थानचतुष्टयम् JĪĀN. 3, 55. पुराणन्यायमीमांसार्थशास्त्राङ्गमिश्रिताः । वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥ 1, 3. — p) Feld, Fach VARĀH. BRH. S. 48, 24. 53, 54. — q) ein rechter, passender Ort Spr. (II) 6953. 7222. 7225. स्थाने am rechten Orte 5001. स्थान एव हि युज्यते भृत्याश्चाभरणानि च 7221. अस्थाने am unrechten Orte PAÑĀT. BR. 10, 10. R. GORR. 2, 20, 6. KATHĀS. 121, 178 (Gegens. सुस्थाने 181). अस्थाने (so zu lesen). भूषणादीनां विन्यासः SĪH. D. 143. अस्थानोपगतपमुना MEGH. 52. अस्थानवर्षिन् DAÇAR. 102, 15. स्थाने vorallgemeinert so v. a. zu rechter Zeit, mit Recht gaṇa स्वरादि zu P. 1, 1, 27. = युक्त AK. 3, 5, 11. H. an. 7, 32. MED. avj. 46. = सत्य ÇABDAR. im ÇKDR. — BHĀG. 11, 36. रोषः प्रयुक्तः MBH. 1, 6845. 4, 2839. R. 3, 67, 12. RAGH. 5, 16. 7, 13. KUMĀRAS. 6, 67. 7, 65. ÇĀK. 37, 4. 63, 7. v. l. VIER. 8, 16. MĀLAV. 49. Spr. (II) 4625. BHĀG. P. 3, 21, 51. अस्थाने R. 2, 23, 6. 3, 13, 7. 4, 20, 10. MĀRK. P. 74, 18. PAÑĀT. 10, 10. अस्थानकुपित R. 4,

VII. Theil.

32, 6. अस्थानकास SĪH. D. 188. — r) Ort so v. a. Gebiet eines Gottes nach der Eintheilung in प्रथम, मध्यम, उत्तम Erde, Luft, Himmel Nir. 7, 8. fgg. मध्यं und इहं 28. — s) ein fester Ort, Burg Spr. (II) 2677. 2844, v. l. — t) Ort so v. a. Organ eines Lautes ÇĀNDĪLA. ÇA. 1, 2, 4. 5. RV. PRĪT. 1, 20. 21. 23 (10. 11. 13). 6, 8. 13, 2. 14, 2. 7 (तालुं adj.). 18. AV. PRĪT. 1, 41. TS. PRĪT. 2, 31. 33. 44. 46 (काण्ठं adj.). 49 (नासिकां adj.). VS. PRĪT. 1, 10. उरःकाण्ठभूम्यानि 30. 43. 62. 90. SARVADARĢANAS. 128, 22. 139, 17. अष्टस्थानसमीरित HARIV. 16161. षष्टौ स्थानानि वर्षानामुरः काण्ठः शिरस्तथा । त्रिहामूलं च दत्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च ॥ ÇĪNDĪLA 13 in Ind. St. 4, 107. WEBER, PRATĪCĪKĀS. 107. वर्षाचतुःस्थान RĀMAT. UP. 362. एकस्थानत्व VOP. 1, 4. Organ überh.: द्रव्योपलब्धिं so v. a. Auge BHĀG. P. 3, 31, 45. — u) Lage —, Stufe der Stimme (leiser oder lauter, höher oder tiefer): पद्वर्धं कृद्दयनामेः कपोलपालकादयः । प्राणसंचारणस्थानं स्थानमित्यभिधीयते ॥ उरः काण्ठः शिरश्चेति तत्पुनरिति विधं भवेत् । मन्द्रं मध्यं च तारं च ÇĀNDĪLA beim Schol. zu R. ed. Bomb. 1, 4, 10. प्रथमं KĪTJ. ÇA. 3, 1, 3. 9, 6, 17. मध्यमं ĀÇV. ÇA. 4, 15, 10. त्रैषादिरामुरः स्थाने 3, 8, 7. मन्द्रं, मध्यमं, उत्तमं RV. PRĪT. 13, 17. 15, 3. मन्द्रमध्यमतार TS. PRĪT. 22, 11. 23, 2. sieben 4. 11. प्रमाणे ऽथ लये (so ed. Bomb.) स्थाने MBH. 2, 132. मूर्ध्नि कोविद R. ed. Bomb. 1, 4, 10. कर्णान्वित 7, 71, 15. 93, 13. पञ्चमं RĪĀ-TAR. 5, 362. KATHĀS. 24, 25 (zugleich in der Bed. k). वीणा द्युता स्थानात् so v. a. verstimmt 34, 159. सुं (doppelsinnig) Inschr. in Journ. of the Am. Or. S. 7, 10, ÇI. 37. — v) ein ein tretender oder eingetretener Fall M. 7, 56. 8, 8. 119. JĪĀN. 2, 226. परिभवः PAÑĀT. 82, 12. — w) das am-Platz-Sein, Gelegenheit —, Veranlassung zu (im gen. oder im comp. vorangehend) KĪTJ. ÇA. 3, 3, 6. 22, 7, 1. 2. 24, 4, 24. LĪTJ. 9, 12, 8. संतापस्यास्य ते स्थानं नाहं पश्यामि R. 5, 71, 3. त्रिविधस्य दुःखस्य MĀRK. P. 37, 30. दण्डस्य BHĀG. P. 6, 1, 39. 43. क्रोधं MBH. 3, 14677. श्रमवर्षं 7, 7092. कर्षं 9, 2229. श्रमप्रीतिं (so ed. Bomb.) 14, 131. कोपं 15, 821. शोकं Spr. (II) 2163. 6523. भयं ebend. R. GORR. 2, 7, 2. 3, 59, 19. प्रमादं UTTARAK. 37, 13 fg. (51, 5). अनुशयं MĀLATĪ. 140, 5. लाभं KATHĀS. 32, 138. अश्राद्धेयवाक्यं PAÑĀT. ed. orn. 59, 9. concret der Gegenstand, der zu Etwas Veranlassung giebt oder geben kann: श्रेतं पदं शिरोरूपाणां स्थानं परं परिभवस्य Spr. (II) 6599. श्रायातं MBH. 12, 2112 (nach der Lesart der ed. Bomb.). श्रपि सूक्ष्माणि लोकस्य तर्कस्थानानि चित्तयन् KATHĀS. 24, 103. विभीषिकां PAÑĀT. 160, 21. नाहं कोपस्थानम् ÇUK. in LA. (III) 34, 15. तत्काव्यस्याप्यथास्थानमेकः श्रीसातवाहनः so v. a. ist allein würdig, dass man ihm dieses Gedicht anvertraut, KATHĀS. 8, 10. मान्यं ein achtungswerther Gegenstand Spr. (II) 6072. — x) Abtheilung einer Disciplin, z. B. der Medicin bei Kāraka, Suçruta u. s. w.: सूत्रं oder श्लोकं, निदानं, शारीरं u. s. w. श्रायुर्वेदस्याष्टौ Ind. St. 1, 21, 1. श्रयवेदस्याष्टौ 3, 251, 1. fgg. = ग्रन्थसंघि TRĪK. 3, 2, 25. — y) ein astrologisches Haus, Unterabtheilung eines astr. H. VARĀH. BRH. S. 40, 9. 44, 11. fg. 103, 8. BRH. 11, 15. 23, 1. Verz. d. Oxf. H. 330, a, 27. 31. 34. 36. 40. 44. b, 3. 8. 30. 32. 34, 37. — 2) m. N. pr. eines Fürsten der Gandharva R. 4, 41, 61. — 3) तत्स्थान AIR. BR. 6, 5 nach SĪ. = तत्सदृशः WEBER in Ind. St. 9, 293 vermuthet तत्स्थान. — Vgl. कर्मं, गोष्ठानं und गोस्थानं, जनं, जन्मं, तुरंगं, तूष्णीं, धनं (auch Bez. des zweiten astrologischen Hauses Verz. d. Oxf. H. 330,

83\*